विक्रम बेताल की कहानियॉ

भविष्य पुराण से

संकलनकर्ता

सुषमा गुप्ता

Cover Title : Vikram Betal Ki Kahaniyan (Vikram Betal Stories)
Cover Page picture: Vikram and Betal
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/index-vaitaal.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of India

विंडसर, कैनेडा

दिसम्बर 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

विक्रम बेताल की कहानियॉ 5

विक्रम बेताल का परिचय 7

1 एक मालिक और उसके नौकर की वफादारी की कहानी 13

2 महादेवी की कहानी 18

3 त्रिलोकसुन्दरी की कहानी 24

4 एक राजा जिसने अपनी इच्छाओं की वजह से अपनी जनता का नाश किया 27

5 सबको अपने कर्मों का फल भुगतना है 33

6 जान देने का उदाहरण 36

7 सबको अपने कर्मों का फल भुगतना है 41

8 सब बच्चों को एक सा समझो 45

9 पढ़ो कम और समझो ज़्यादा 49

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

विक्रम बेताल की कहानियॉ

विक्रम बेताल की कहानियॉ बहुत पुरानी हैं और हमारे भारतीय समाज में बहुत ही लोकप्रिय हैं। ये कहने और सुनने में तो ज़्यादा लोकप्रिय नहीं हैं पर हर बच्चा और हर बड़ा इनको पढ़ना पसन्द करता है।

विक्रम बेताल की जो कहानियॉ पत्रिकाओं और पुस्तकों की सहायता से भारत में बच्चों में प्रचलित हैं उनका वातावरण उन कहानियों से कुछ दूसरा ही है जो कहानियॉ हम उनकी यहॉ देने जा रहे हैं। हालॉकि दोनों ही कहानियॉ उज्जयिनी के राजा विक्रम और एक बेताल के बीच में कही सुनी कहानियॉ हैं फिर भी... ।

लोकप्रिय वातावरण

इन कहानियों का लोकप्रिय वातावरण कुछ इस प्रकार है। एक बार उज्जैन के राजा विक्रमदित्य के सोने के कमरे में एक देव प्रगट हुआ और उसको बताया — "मैं यहॉ तुम्हारी जान बचाने आया हूँ।" फिर उसने राजा को यह भी बताया कि "एक राजा था चन्द्रभान। तुम्हारे पूर्वजों ने यह राज्य उसी राजा चन्द्रभान से लिया था। एक दिन वह राजा जंगल में गया वहॉ उसने एक आदमी देखा जो एक पेड़ से उलटा लटका धुँआ पी कर रह रहा था। वह राजा उससे बहुत प्रभावित हुआ और आ कर यह सब अपने दरबार में बताया तो एक राज नर्तकी बहुत हँसी।

वजह पूछने पर वह बोली कि वह कोई ढोंगी था। साबित करने के लिये वह कुछ समय बाद उसको और उसके और अपने चार महीने के बच्चे को ले कर दरबार में आयी। जब उस आदमी को सच्चाई का पता चला तो वह योगी बहुत गुस्सा हुआ। उसने उस बच्चे को मार दिया और राजा चन्द्रभान को भी मार दिया।

फिर एक ही मुहूर्त मे उसने तीन योगी पैदा किये। एक योगी राजा के घर पैदा हुआ, दूसरा देवी के घर में पैदा हुआ और तीसरा एक कुम्हार के घर पैदा हुआ। राजा योगी पाताल लोक में राज कर रहा है। देवी के घर वाले योगी ने कुम्हार वाले योगी का मार दिया और अब वह देवी वाला योगी तुम्हें मारने वाला है सो होशियार रहना। मैं इसी लिये यहॉ आया था।"

कुछ दिनों बाद राजा विक्रमदित्य के दरबार में एक साधु आया और उसको एक फल दे कर चला गया। वह और भी कई मौकों पर आया और हर बार वैसा ही एक फल दे कर चला गया। राजा ने कोई फल नहीं खाया सब फल एक कोठरी में रखवा दिये। उसको लगा कि यह वही योगी था जो उसे मारना चाहता था। एक दिन उसने वे सब फल काटे तो उन सब में एक एक लाल निकला। जब अगली बार योगी आया तो राजा ने उसको लाल के बारे में बताया तो उसने कहा कि वह उसके योग की ताकत का नतीजा है।

राजा ने पूछा कि उसने उसे ये फल क्यों दिये तो वह बोला कि अगर तुम मेरी सहायता करो तो मैं तुम्हें बहुत बड़ा खजाना दे सकता हूँ। राजा ने पूछा वह कैसे। वह साधु बोला — "तुम एक रात मेरे पास रहो और जो मैं तुमसे करने के लिये कहूँ वह तुम करो।" "ठीक है।" कह कर राजा उसके बताये दिन उसके पास पहुँच गया। योगी ने कहा — "यहॉ से लगभग साढ़े चार मील की दूरी पर एक पेड़ से एक लाश लटकी हुई है। तुम मुझे वह ला दो।"

विक्रम उसे लेने चला गया। पर जब वह उसको ले जाने लगा तो उस लाश ने कहा कि "मैं तुम्हारे साथ एक शर्त पर जा सकता हूँ। मैं तुमको रास्ते भर कहानी सुनाता जाऊँगा ताकि हमारा तुम्हारा रास्ता आराम से कट जाये। पर तुम बीच में नहीं बोलोगे। अगर तुम बीच में बोलोगे तो मैं भाग कर फिर यहीं पेड़ पर वापस आ जाऊँगा। पर हर कहानी के बाद मैं तुमसे एक दो सवाल पूछूँगा। अगर तुमने जानते बूझते उन सवालों का जवाब नहीं दिया तो तुम्हारा सिर फट कर इधर उधर बिखर जायेगा।"

राजा ने उसकी यह शर्त स्वीकार कर ली और उसको कन्धे पर लाद कर ले चला।

इस आने जाने के बीच उस बेताल ने राजा को **25** कहानियॉ सुनायीं और जैसे ही राजा कहानी के बाद के सवाल का जवाब देता था वह बेताल वापस जा कर पेड़ पर लटक जाता था। विक्रम उसको फिर लेने जाता था और फिर एक कहानी सुनता था। **24** कहानियों के सवालों के जवाब तो विक्रम ने दे दिये पर **25**वीं कहानी के सवाल का जवाब वह नहीं दे सका। उसके बाद ही विक्रम उसको उस योगी के पास ले जा सका।

पर इन कहानियों का वातावरण उन लोकप्रिय कहानियों के वातावरण से बिल्कुल अलग है। ये कहानियॉ इतने तनाव के वातावरण में नहीं कही गयी हैं।

विक्रम बेताल का परिचय

विक्रम बेताल की जो कहानियॉ[1] भारत में प्रचलित हैं और बच्चे जिन को बड़े शौक से सुनते हैं वे कहानियॉ —

1 क्योंकि वे **25** कहानियॉ हैं इसलिये वे बेताल पच्चीसी के नाम से मशहूर हैं।

2 ये सब कहानियॉ एक बड़े ही तनाव भरे वातावरण में कही गयीं हैं और ये सब कहानियॉ रास्ता काटने के लिये सुनायी गयीं हैं।

3 इन कहानियों को कहने से पहले बेताल विक्रम से दो शर्तें रखता है – एक तो यह कि वह रास्ते में कुछ बोलेगा नहीं और अगर वह बोला तो उसका सिर टुकड़े टुकड़े हो कर बिखर जायेगा। दूसरी शर्त यह कि किसी भी बात का अगर वह जानते बूझते भी जवाब नहीं देगा तो विक्रम बेताल को जहॉ से लाया है बेताल फिर से वहीं चला जायेगा।

4 बेताल चालाक है। वह विक्रम को हर बार एक ऐसी कहानी सुनाता है जिसमें वह उससे न्याय करवाता है या फिर कोई पहेली सुलझवाता है। अब विक्रम क्योंकि अक्लमन्द है और अपने न्याय के लिये मशहूर है इसलिये वह चुप नहीं रह सकता।

[1] All these stories can be read here in English with their background at the Web Site : http://sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/index-vaitaal.htm

क्योंकि अगर वह उसके किसी सवाल का जानते बूझते जवाब नहीं देगा तो उसके सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे इसलिये उसको बेताल के सवालों का जवाब देना ही पड़ता है और जैसे ही वह बोलता है तो बेताल उसके कन्धे से उतर कर अपने पेड़ पर चला जाता है।

बेचारे विक्रम को उसे लाने के लिये फिर जाना पड़ता है और इन कहानियों का सिलसिला फिर से शुरू हो जाता है।

इस तरह से बेताल विक्रम को **24** बार चक्कर कटवाता है पर **25**वीं बार की कहानी में विक्रम उसकी कहानी का जवाब नहीं दे पाता।

इसके अलावा जहॉ विक्रम को बेताल को ले जाना है वह जगह भी आ जाती है सो **25**वीं कहानी पर ये कहानियॉ खत्म हो जाती हैं।

भविष्य पुराण की कहानियॉ

विक्रम बेताल की कहानियॉ भविष्य पुराण में भी दी हुई हैं। पर वे उस लोकप्रिय वातावरण वाली कहानियॉ नहीं हैं और ना ही उस बेताल ने सुनायी हैं जिसने लोकप्रिय वातावरण में सुनायी हैं।

भविष्य पुराण की विक्रम बेताल की कहानियों का वातावरण इन लोकप्रिय कहानियों से बिल्कुल ही अलग है। इनमें बेताल कोई मरा हुआ भूत आदि नहीं है बल्कि इस नाम का एक देवता है जो

शिव जी के कहने पर विक्रम के राजा बनने के बाद उसका इम्तिहान यह जॉचने के लिये लेने के लिये आता है कि वह न्यायपूर्वक राज करने के लायक है भी या नहीं।

और यह काम वह अलग अलग तरीके की कहानियॉ सुना कर करता है। कहानियों का ढंग वही है – उसका विक्रम को कहानी सुनाना और कहानी सुनाने के बाद उस कहानी पर एक सवाल पूछना।

पर न तो उनमें कोई शर्त है और न ही कोई तनाव का वातावरण है और न ही विक्रम बेताल को ले कर कहीं जाता है। ये सब कहानियॉ दरबार में बैठ कर शान्ति से कही सुनी गयी हैं। ये केवल **9** कहानियॉ हैं।

जब कलियुग को शुरू हुए **3000** साल बीत गये तो शक लोगों[2] को मारने और आर्य धर्म को स्थापित करने के लिये एक ब्राह्मण ने शिव के लिये तप किया। बाद में वह अपने तप करने की वजह से भगवान शिव जैसा बन गया और फिर उसने भगवान शिव की आज्ञा से धरती पर विक्रमदित्य के नाम से जन्म लिया।

यह विक्रमदित्य अपने बचपन से ही बहुत होशियार था। जब वह **5** साल का हुआ तो वह तप करने चला गया और उसने **12** साल तक तप किया। उस तप के बाद वह बहुत धनवान हो गया।

[2] Shak race people

उसने अपने लिये एक ऐसा दैवीय सिंहासन बनवाया जिसमें **32** मूर्तियॉ[3] लगी हुई थीं। भगवान शिव उस सिंहासन की खुद रक्षा करते थे। विक्रम उज्जैन में महाकालेश्वर में भगवान शिव की पूजा किया करता था।

विक्रम ने मन्दिर के ऑगन में ऐसे कई खम्भे लगवाये हुए थे जो कई धातुओं के बने हुए थे और उनमें कई प्रकार के रत्न जड़े हुए थे। उसने अपना सिंहासन एक ऐसी जगह लगवा रखा था जहॉ बहुत सारी लताऍ और फूल थे।

वही राजा विक्रमदित्य एक बहुत ही मशहूर दानी और दूसरों की भलाई करने वाला राजा हो गया है। इसकी कथाऍ स्कन्द पुराण आदि, बृहत कथा, सिंहासन बत्तीसी, कथा सरित् सागर, पुरुष परीक्षा आदि पुस्तकों में भी मिलतीं हैं।

कई लोगों ने विक्रमादित्य नाम के राजा का वर्णन किया है पर यह विक्रमादित्य जिसकी कहानियॉ हम यहॉ दे रहे हैं उज्जैन का राजा था जिसके दरबार में महाकवि कालीदास, अमर सिंह, एक बहुत बड़े ज्योतिषी वराह मिहिर, वैद्यराज धन्वन्तरि, घटकरपर आदि नव रत्न थे। इन नव रत्नों के जैसा न तो अभी तक कोई हुआ है और न ही आगे कभी होगा।

[3] These 32 statues of Vikram's throne also tell 32 stories which are famous by the name of "Sinhaasan Batteessee". You may read these stories in English at the Web Site : http://sushmajee.com/shishusansar/stories-sinhaasan/index-sinhaasan.htm

उसके बाद राजा भोज से ले कर सम्राट अकबर[4] तक सभी राजाओं ने अपने अपने दरबारों में नव रत्न रखने की कोशिश की। विक्रम अपने दरबार में बहुत ऊॅचे ऊॅचे ब्राह्मणों को बुलाता था और उनसे धार्मिक कथाएॅ सुनता था।

एक बार वह अपने दरबार में बैठा किसी ब्राह्मण से कोई कथा सुन रहा था कि उसी समय बेताल नाम का एक देवता एक ब्राह्मण का रूप रख कर उसके दरबार में आया।

वह आ कर बोला — "आपकी जय हो राजन।" और एक आसन पर बैठ कर बोला — "हे राजन, अगर आपकी इच्छा हो तो मैं भी आपको कुछ इतिहास सुनाऊॅ?"

तो बच्चो, उस बेताल देवता ने राजा विक्रम को इतिहास की जो कहानियॉ सुनायीं आज हम यहॉ वही विक्रम बेताल की कहानियॉ प्रस्तुत कर रहे हैं। तुमने विक्रम बेताल की कहानियॉ तो बहुत पढ़ी होंगी और सुनी भी होंगी पर ये कहानियॉ उन पुस्तकों से नहीं ली गयीं हैं। इसी लिये ये उनसे बिल्कुल अलग हैं।

विक्रम बेताल की ये कहानियॉ हमारे **18** महापुराणों में से एक भविष्य पुराण[5] का एक हिस्सा हैं और ये कहानियॉ उसी पुस्तक से

[4] Emperor Akbar also had nine jewels in his court among then Tansen, Birbal, Raja Maan Singh, Raja Todarmal, Abul Fazal, Faizi were very famous.

[5] Taken from Sankshipt Bhavishya Puraan, Motaa Type. 4th edition, Samvat 2060. Gita Press, Gorakhpur, UP

ली गयीं हैं। इसलिये ये कहानियॉ शायद तुमको कुछ अलग सी लगें और नयी भी।

तो लो पढ़ो विक्रम बेताल की ये नयी कहानियॉ हिन्दू धर्म ग्रन्थ भविष्य पुराण से...

1 एक मालिक और उसके नौकर की वफादारी की कहानी[6]

सो भगवान शिव के दास बेताल ने भगवान शिव का ध्यान किया और राजा विक्रमादित्य से बोला — "आज मैं तुमको एक बहुत ही मजेदार कहानी सुनाता हूँ। सुनो।

बहुत पुराने समय की बात है कि वर्धमान नाम का एक बहुत ही खुशहाल शहर था। उसमें एक बहुत ही धार्मिक राजा राज करता था जिस का नाम था रूपसेन। उसकी एक बहुत ही पतिव्रता पत्नी थी विद्वन्माला।

एक दिन वीरवर नाम का एक क्षत्रिय अपनी पत्नी, एक बेटे और एक बेटी के साथ राजा के दरबार में रोजी रोटी कमाने के लिये आया। उसकी समस्या सुन कर राजा ने उसको **1000** सोने के सिक्के रोज की तनख्वाह पर अपने सिंह द्वार[7] का चौकीदार रख लिया।

कुछ दिनों के बाद राजा ने अपने दूसरे नौकरों से उसकी पैसों की स्थिति के बारे में पूछा तो उन्होंने राजा को बताया कि वह अपनी तनख्वाह का काफी हिस्सा यज्ञ, तीर्थ, मन्दिरों में पूजा और

[6] Story of the Master and His Faithful Servant – a Vikram Betal story from Bhavishya Puran

[7] Main gate of the King's palace

संतों आदि पर खर्च कर देता था। अपने और अपने परिवार के लिये तो वह बहुत ही कम बचा कर रखता था।

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने उसको पक्के तरीके से अपने यहॉ नौकर रख लिया।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि आधी रात में बहुत ज़ोर की बारिश हो रही थी कि राजा ने शमशान भूमि से एक स्त्री के रोने की आवाज सुनी। तो राजा ने वीरवर को यह पता करने के लिये भेजा कि वह स्त्री क्यों रो रही थी।

वीरवर अपनी तलवार ले कर शमशान भूमि की तरफ उस रोती हुई स्त्री से यह पूछने के लिये चला कि वह क्यों रो रही थी। राजा भी छिपे तौर पर उसके पीछे पीछे चला ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह किसी परेशानी में फॅस जाये।

शमशान भूमि पहुॅच कर वीरवर ने इधर उधर देखा तो एक स्त्री उसको रोती हुई दिखायी दे गयी। वह उसके पास पहुॅचा और उससे पूछा कि वह क्यों रो रही थी।

वह स्त्री रोते रोते बोली — "मैं इस राज्य की राज्य लक्ष्मी[8] हूॅ। इस महीने के आखीर में राजा रूपसेन मर जायेगा। उसके मरने के बाद मैं अनाथ हो जाऊॅगी। फिर मैं कहॉ जाऊॅगी इसी लिये मैं रोती हूॅ।"

[8] Royal treasury

वीरवर राजा का बहुत ही वफादार था इसलिये उसने उससे पूछा कि क्या कोई ऐसा तरीका था जिससे राजा न मरे और वह बहुत दिनों तक राज करे।

वह स्त्री बोली — "अगर तुम चंडिका के मन्दिर में अपने बेटे की बलि चढ़ाओ तब यह राजा बच सकता है।"

यह सुन कर वीरवर तुरन्त ही घर आया। उसने अपने परिवार को जगाया और उनको सब कुछ बता कर सब लोगों को साथ ले कर वह चंडिका के मन्दिर में आया। राजा अभी भी छिपे तौर पर वीरवर का पीछा कर रहा था।

मन्दिर आ कर वीरवर ने राजा की लम्बी उम्र की प्रार्थना की और अपने बेटे की बलि चढ़ा दी। अपने भाई का कटा सिर देख कर उसकी बहिन दुख के मारे वहीं मर गयी। अपने दोनों बच्चों को मरा देख कर उनकी मॉ भी मर गयी।

वीरवर ने तीनों का अन्तिम संस्कार किया और फिर राजा की लम्बी उम्र के लिये खुद की भी बलि चढ़ा दी।

राजा अभी भी यह सब छिप कर देख रहा था। यह सब देख कर राजा को अपनी ज़िन्दगी बिल्कुल ही बेकार लगी सो उसने भी अपने आपको मारने के लिये अपनी तलवार निकाल ली।

जैसे ही उसने अपने आपको मारने के लिये तलवार उठायी कि देवी ने प्रगट हो कर राजा का हाथ पकड़ लिया और बोली —

"राजन, मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। तुम्हारी ज़िन्दगी को अब कोई खतरा नहीं है। तुम मुझसे कोई भी वर माँग लो।"

राजा बोला — "अगर आप मुझे वर देना ही चाहती हैं तो वीरवर और उसके सारे परिवार को ज़िन्दा कर दीजिये।"

"ऐसा ही हो।" कह कर देवी चली गयी। राजा चुपचाप घर वापस चला आया और आ कर अपने बिस्तर पर लेट गया।

उधर वीरवर अपने पूरे परिवार को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ। वह अपनी पत्नी और बच्चों को घर ले गया और अपना चौकीदारी का काम करने के लिये महल वापस चला गया।

कुछ समय बाद राजा ने उसे बुलाया और उससे उस स्त्री के रोने का कारण पूछा कि वह क्यों रो रही थी तो उसने कहा — "हे राजन, वह तो कोई चुड़ैल थी। जैसे ही मैं वहाँ पहुँचा तो वह गायब हो गयी। आप बिल्कुल चिन्ता मत करिये उसके बारे में। आप आराम से सोइये।"

राजा वीरवर की वफादारी से बहुत खुश हुआ और उसने उस से दोस्ती कर ली।"

यह कहने के बाद बेताल चुप हो गया पर फिर बोला — "हे राजन, इस कहानी में सबने एक दूसरे के प्यार के लिये त्याग किया पर इन सबमें सबसे ज़्यादा प्रेम और सबसे बड़ा त्याग किसका था?"

राजा बोला — "हालॉकि इस कहानी में सबने एक दूसरे के लिये त्याग किया और एक दूसरे के लिये अपना अपना कर्तव्य निभाया फिर भी इस कहानी में राजा का त्याग सबसे बड़ा है।

क्यों? क्योंकि वीरवर उसका नौकर था और वह अपनी सेवाओं के लिये राजा से पैसे लेता था। सो उस पैसे की वजह से उसने अपनी बलि चढ़ायी।

वीरवर की पत्नी पतिव्रता थी और अपने धर्म का पालन करने वाली थी। उसने इसलिये बलिदान दिया। बहिन अपने भाई को प्यार करती थी और लड़का अपने पिता को। उन्होंने इसलिये अपने अपने बलिदान दिये।

पर राजा रूपसेन का उदाहरण सबसे अच्छा उदाहरण है जिसमें वह एक मामूली से नौकर के लिये अपना बलिदान देता है। इस वजह से केवल उसी का बलिदान इन सब बलिदानों में सबसे बड़ा है।"

2 महादेवी की कहानी[9]

बेताल फिर बोला — "राजन, एक कहानी और सुनिये। एक बार उज्जयिनी में चन्द्र वंश का महाबल नाम का एक राजा राज करता था। उसका एक बहुत ही वफादार नौकर था हरिदास।

हरिदास की पत्नी भक्तिमाला बहुत ही धार्मिक थी और हर समय साधु संतों की सहायता करने के लिये तैयार रहती थी। उनके एक सुन्दर सी बेटी थी महादेवी।

एक दिन महादेवी ने अपने पिता से कहा — "पिता जी, आप मेरे लिये कोई ऐसा दुलहा ढूँढना जो मुझसे ज़्यादा होशियार हो, और किसी भी तरह का नहीं।"

हरिदास अपनी बेटी की बात सुन कर बहुत खुश हुआ और अपनी बेटी से बोला कि वह ऐसा ही करेगा। यह कह कर वह अपने काम पर शाही दरबार चला गया और वहॉ जा कर राजा को सिर झुकाया।

राजा ने उसको अपने ससुर के घर उनका हाल चाल जानने के लिये भेजा कि वह वहॉ जा कर उसकी ससुराल का हालचाल पता करके आये।

[9] Story of Mahaadevee – a Vikram Betal story from Bhavishya Puran

राजा का ससुर हरिश्चन्द्र तैलंग देश का राजा था। सो हरिदास तैलंग देश चल दिया और वहॉ जा कर अपने राजा का हाल चाल बताया। राजा हरिश्चन्द्र अपने दामाद का हाल सुन कर बहुत खुश हुआ।

फिर उसने हरिदास से कहा — "तुम मुझे बड़े विद्वान ब्राह्मण लगते हो। तुम मुझे यह बताओ कि मुझे कैसे पता चलेगा कि कलियुग आ गया है?"

हरिदास बोला — "जब लोग वेदों द्वारा लगायी गयी हदें पार कर जायें, जब धर्म दुनियॉ से गायब होने लगे तब जानो कि कलि युग आ गया है। इसके अलावा कलि म्लेच्छ लोगों को बहुत प्यार करता है और देवताओं का अपमान करता है। तब जानो कि कलि युग आ गया है।

हे राजन, पाप की पत्नी का नाम मृषा[10] है और उनके बेटे का नाम है दुख[11]। दुख की पत्नी का नाम है दुर्गति[12]। जब कलि युग आयेगा तो ये सब सब घरों में रहेंगे।

सारे राजा बहुत गुस्सा करेंगे, सारे ब्राह्मणों की इच्छाएँ बढ़ जायेंगी और वे उनके गुलाम हो जायेंगे। अमीर लोग और लालची हो जायेंगे। शूद्रों को समाज में ऊँचा दरजा दिया जायेगा। स्त्रियों में

[10] Lie
[11] Sorrow
[12] Bad situation

शरम जाती रहेगी और नौकर लोग अपने मालिकों की हत्या कर देंगे।

जब ऐसी स्थिति आ जाये तब यह समझना चाहिये कि कलि युग आ गया है। पर जो कोई भी भगवान के चरणों में शरण लेगा उस समय केवल वही सुखी रहेगा।"

यह सब सुन कर राजा हरिश्चन्द्र बहुत खुश हुए। उन्होंने उस ब्राह्मण को बहुत सारी दक्षिणा दी, अपनी कुशल बतायी और विदा किया। वह ब्राह्मण भी राजा के ससुर ओर उने परिवार की कुशल जान कर अपने घर वापस आ गया।

उसी समय बुद्धिकोविद नाम का एक विद्वान ब्राह्मण हरिदास से मिलने आया और उसको अपनी एक खास विद्या का परिचय दिया। उसने देवी के एक मन्त्र का जाप किया और उसके असर से हरिदास को शीघ्रग नाम का एक हवाई जहाज दिखाया।

हरिदास उसकी इस होशियारी से बहुत प्रभवित हुआ। उसने अपनी बेटी की शादी उस विद्वान ब्राह्मण से करने का विचार बना लिया।

हरिदास के एक बेटा भी था जिस का नाम था मुकुन्द। उस समय वह अपने गुरू के पास पढ़ने के लिये गया हुआ था। जब उस

की पढ़ाई खत्म हो गयी तो उसने अपने गुरू से गुरू दक्षिणा[13] मॉगने के लिये कहा।

उसके गुरू ने कहा — तुम अपनी बहिन महादेवी की शादी मेरे विद्वान बेटे धीमान से कर दो।"

मुकुन्द ने हॉ कर दी और अपने घर वापस आ गया।

इधर भक्तिमाला ने भी अपनी बेटी के लिये एक विद्वान लड़का देख रखा था। उसका नाम वामन था और वह गुरू द्रोण का शिष्य था। वह तीर कमान चलाने और दूसरे हथियारों को इस्तेमाल करने में बहुत होशियार था। इस शादी की बात को पक्का करने के लिये भक्तिमाला ने उसको दक्षिणा और पान भी दे रखे थे।

अब जब समय आया तो वे तीनों लड़के महादेवी से शादी करने की इच्छा से हरिदास के घर आये। इस बीच एक राक्षस महादेवी को उठा कर विन्ध्य पहाड़ पर ले गया। महादेवी का अपहरण सुन कर तीनों लड़के रोने लगे।

गुरू के बेटे धीमान ने पूछा कि महादेवी कहॉ है तो मुकुन्द के चुने हुए ब्राह्मण ने उसको बताया कि एक राक्षस उसको विन्ध्य पहाड़ पर ले गया है।

---

[13] In olden days there were no modern schools like of today. The children used to go to their Guru's house to get educated. They lived there in Guru's Aashram and their Guru used to take care of them. There was no fees that one had to pay to the Guru. After the education was complete, the student asked the Guru as what he should pay to him for his teaching. Then the Guru would ask some nominal money, or thing, or some service from the student. And that order was to be carried out by the student otherwise his education was not considered complete. That was his fees and that was called Guru Dakshinaa.

इस पर बुद्धिकोविद ब्राह्मण ने एक ख़ास हवाई जहाज बनाया और दूसरे दोनों लड़कों को साथ ले कर विन्ध्य पहाड़ की तरफ चल दिया। तो तीसरे ब्राह्मण ने जिसको भक्तिमाला ने अपनी बेटी महादेवी के लिये चुना था वहॉ से एक तीर चलाया और उस राक्षस को मार दिया।

इस तरह तीनों के सहायता से महादेवी वहॉ से घर लायी गयी। जब वे सब घर आ गये तो तीनों अपनी अपनी महानता बताने लगे कि उन्होंने ही महादेवी को उस राक्षस से बचाया है और उनसे ही उसकी शादी होनी चाहिये।

पर उनमें से यह कोई नहीं बता सका कि उनमें से किसकी शादी महादेवी से होनी चहिये।"

यह कहानी सुनाने के बाद बेताल ने पूछा — "हे राजन, अब तुम मुझे यह बताओ कि महादेवी के लिये उन तीनों में से कौन सा लड़का सबसे ज़्यादा ठीक है जिससे महादेवी की शादी की जाये?"

राजा बोला — "जिस लड़के ने उस लड़की का पता बताया कि उसको कोई राक्षस उठा कर ले गया था वह तो उसके पिता के समान है।

दूसरा ब्राह्मण बुद्धिकोविद जो केवल अपनी मन्त्र की ताकत से उन सबको वहॉ ले कर गया जहॉ वह लड़की थी वह उसके भाई के समान है।

पर तीसरा ब्राह्मण जो उस राक्षस को मार कर उस लड़की को वहॉ से बचा कर लाया वही उसके लिये सबसे ज़्यादा ठीक वर है।"

3 त्रिलोकसुन्दरी की कहानी[14]

बेताल आगे बोला — "अब मैं तुमको एक और कहानी सुनाता हूँ। ध्यान से सुनो। एक शहर था चम्पापुरी[15]। उसका राजा चम्पकेश एक बहुत ही बलवान राजा था। उसकी पत्नी का नाम था सुलोचना। उन दोनों के एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी उसका नाम था त्रिलोकसुन्दरी।

त्रिलोकसुन्दरी इतनी सुन्दर थी कि देवता भी उससे शादी की इच्छा रखते थे। सो जब उसका स्वयंवर[16] रचा गया तो यम, इन्द, वरुण, कुबेर आदि देवता भी उसके स्वयंवर में आये।

आये हुए लड़कों में से इन्द्रदत्त बोला — "राजन, मैं शास्त्रों में होशियार हूँ और मैं सुन्दर भी हूँ सो आप अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दीजिये।"

धर्मदत्त बोला — "हे राजन, मुझे तीर कमान चलाना बहुत अच्छा आता है और मैं भी सुन्दर हूँ तो आप अपनी बेटी की शादी आप मुझसे कर दें।"

---

[14] Story of Trilok Sundaree – a Vikram Betal story from Bhavishya Puran

[15] Present Bhagalpur, Bihar

[16] "Swayam" means "Self" and "Var" means "Groom", so Swayamvar means when a girl herself chooses her husband. In olden days girls had the right to choose their husband themselves. Kings and Princes used to attend this occasion and the girl was introduced to them carrying a garland. Whomever she wanted to marry she put that garland in his neck and that was her husband.

तीसरा लड़का बोला — "राजन मेरा नाम धनपाल है। मैं सारे जीवों की भाषा जानता हूॅ। मैं सुन्दर हूॅ और गुणवान हूॅ। आप अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दीजिये और खुश रहिये।"

चौथा लड़का बोला — " मैं बहुत प्रकार की कलाएॅ जानता हूॅ। मैं अपनी मेहनत से पॉच प्रकार के रत्न रोज कमाता हूॅ।

मेरा पहला रत्न है पुण्य के लिये और मेरा दूसरा रत्न है यज्ञ के लिये। मेरा तीसरा रत्न है मेरी आत्मा के लिये और मेरा चौथा रत्न है मेरी पत्नी के लिये। और अपना अखिरी रत्न में अपने खाने पर खर्च करता हूॅ। इसलिये आप अपनी बेटी मुझको दे दीजिये।"

यह सब सुन कर तो राजा सोच में पड़ गया कि वह इनमें से किसको अपनी बेटी दे। सभी बहुत अच्छे थे। वह यह निश्चय ही नहीं कर सका कि इन सबमें से कौन सा लड़का उसकी बेटी के लिये ठीक रहेगा।

इसी पशोपेश में वह अपनी बेटी के पास गया और यह सब उसको बता कर उससे पूछा कि वह इनमें से किससे शादी करना चाहती थी। पर लड़की बहुत शर्मीली थी सो कुछ नहीं बोली।"

यह कहानी सुना कर बेताल ने विक्रम से पूछा — "राजन अब तुम ही बताओ कि इनमें से कौन सा लड़का राजा की बेटी के लिये ठीक है?"

विक्रम बोला — "हे रुद्र के नौकर, उस सुन्दर लड़की को धर्मदत्त से शादी करनी चाहिये। क्योंकि इन्द्रदत्त तो वेद जानता है इसलिये वह ब्राह्मणों की गिनती में आता है।

जो लड़का बहुत सारी भाषाएँ जानता है और अपनी सम्पत्ति बढ़ाने में लगा हुआ है उसकी गिनती वैश्यों में की जा सकती है। तीसरा जो कई कलाएँ जानता है और रत्नों का व्यापार करता है वह शूद्र है।

सो हे बेताल, लड़की को अपने वर्ण के परिवार में ही ब्याहा जाना चाहिये। इसलिये इस लड़की को धर्मदत्त से ही शादी करनी चाहिये जो तीर कमान चलाने में बहुत अच्छा है।

क्योंकि वह अपने कर्मों से क्षत्रिय है और एक क्षत्रिय को क्षत्रिय से ही शादी करने में भलाई है इसलिये राजा को अपनी बेटी को उसको ही दे देनी चाहिये।"

4 एक राजा जिसने अपनी इच्छाओं की वजह से अपनी जनता का नाश किया[17]

बेताल फिर बोला — "राजन अब एक कहानी और सुनो। बहुत पुराने समय में धर्मवल्लभ नाम का एक राजा था जो पुण्यपुर[18] में राज करता था। उसका एक मन्त्री था जिसका नाम था सत्य प्रकाश। सत्य प्रकाश की पत्नी का नाम लक्ष्मी था।

एक बार राजा धर्मवल्लभ ने अपने मन्त्री सत्य प्रकाश से पूछा — "बताओ सत्य प्रकाश, खुशी कितने प्रकार की होती हैं?"

सत्य प्रकाश ने आदरपूर्वक जवाब दिया — "खुशी चार प्रकार की होती हैं महाराज। पहली खुशी तो ब्रह्मचर्य आश्रम में रहने की होती है। इसको ब्रह्मानन्द कहते हैं और यह सबसे अच्छी होती है।

दूसरी खुशी गृहस्थ में रहने की होती है जिसको गृहस्थ का सुख बोलते हैं। यह बीच के किस्म का होता है। तीसरी खुशी वानप्रस्थ आश्रम में रहने की होती है। इसको धर्म आनन्द कहते हैं और यह बहुत ही मामूली किस्म का आनन्द होता है।

चौथा आनन्द सन्यास आश्रम में मिलता है इसको शिव आनन्द कहते हैं। यह सबसे अच्छा और ऊँचे किस्म का आनन्द होता है।

---

[17] The King Who Destroyed His People Because of His Own Desires - a Vikram Betal story from Bhavishya Puran

[18] Modern Poonaa, in Maharashtra

इनमें से गृहस्थानन्द मुख्यतया स्त्रियों की वजह से होता है क्योंकि इस आश्रम में उनके बिना यह आनन्द नहीं मिल पाता।"

उस राजा की अभी तक शादी नहीं हुई थी इसलिये वह अपने लिये पत्नी ढूँढने के लिये दूसरे देशों की यात्रा के लिये चल दिया पर उसको अपनी पसन्द की कोई लड़की ही नहीं मिली।

फिर उसने अपने मन्त्री को अपने लिये कोई लड़की देखने के लिये भेजा जिससे कि वह उससे शादी कर सके और गृहस्थानन्द उठा सके।

सो राजा का मन्त्री दूसरे देशों में गया। वह भी वहॉ पर राजा की पसन्द की लड़की न पा सका तो फिर वह सिन्धु देश जा पहुँचा। वह सिन्धु देश जैसी जगह को देख कर बहुत खुश हुआ।

वहॉ वह समुद्र के किनारे गया और प्रार्थना की — "मैं आपको प्रणाम करता हूँ। ओ सारे रत्नों के भंडार, मैं आपकी शरण में आया हूँ। आप सारी नदियों के मालिक हैं।

मेहरबानी करके मेरे राजा के लिये उसकी पसन्द की एक लड़की दे दीजिये जिससे वे उससे शादी करके गृहस्थानन्द उठा सकें। अगर आपने मुझे ऐसी लड़की नहीं दी तो मैं यहीं मर जाऊँगा।"

समुद्र उसकी यह प्रार्थना सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने उस मन्त्री को एक पेड़ दिखाया जिसमें फलों की जगह मोती लगे हुए

थे। एक बहुत ही सुन्दर लड़की उस पेड़ पर बैठी हुई थी। पर कुछ ही पलों में वह लड़की पेड़ सहित गायब हो गयी।

यह देख कर मन्त्री को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह घर वापस आ गया और आ कर राजा से सारा हाल कहा। यह सुन कर अबकी बार राजा भी मन्त्री के साथ साथ सिन्धु देश में आया और समुद्र के किनारे आया।

राजा ने भी देखा कि एक बहुत ही सुन्दर लड़की उस पेड़ पर बैठी हुई थी। पर उस बार भी कुछ ही पलों में वह लड़की पेड़ सहित समुद्र में ही गायब हो गयी।

यह आश्चर्यजनक चीज़ देख कर राजा खुद भी उस लड़की के पीछे पीछे समुद्र में कूद गया। वहॉ से वह उस लड़की का पीछा करते करते पाताल लोक में चला गया और मन्त्री शहर वापस आ गया।

राजा ने उस लड़की से कहा — "ओ सुन्दर लड़की, मैं तो यहॉ केवल तुम्हारे लिये ही आया हूँ। तुम मुझसे गांधर्व तरीके[19] से शादी कर लो।"

वह लड़की हॅसी और बोली — मैं तुमसे कृष्ण पक्ष की **14**वीं रात को देवी के मन्दिर में मिलूँगी।"

[19] In the old traditional Hindu system there are 8 types of marriages. One of them is this Gaandharv type of marriage. In this type of marriage the bride and groom do not need anybody's permission to marry, without any formal ceremony but with their own consent. Dushyant married Shakuntala by this type only.

राजा उस समय तो वहॉ से वापस चला आया पर कृष्ण पक्ष की 14वीं रात को वह अपनी तलवार ले कर देवी के मन्दिर में पहॅुच गया। वह लड़की वहॉ पहले से ही मौजूद थी।

तभी उस लड़की को बकवाहन नाम के एक राक्षस ने छुआ। यह देख कर राजा बहुत नाराज हुआ और उसने तुरन्त ही अपनी तलवार से उस राक्षस का सिर काट डाला।

फिर उसने उस लड़की से पूछा — "मुझे सच सच बताओ कि यह कौन था और यह यहॉ कैसे आया?"

वह लड़की बोली — "राजन, मैं एक विद्याधर[20] की बेटी हॅू। मेरा नाम मदवती है। मेरे पिता मुझे बहुत प्यार करते हैं। एक बार मैं जंगल गयी तो शाम को घर समय पर खाने के लिये नहीं पहॅुच सकी।

मेरे पिता ने अपनी योग की ताकत से मेरे बारे में सब कुछ जान लिया और मुझे शाप दिया कि "एक राक्षस तुझे कृष्ण पक्ष की 14वीं रात को उठा कर ले जायेगा।"

जब मुझे इस शाप के बारे में पता चला तो मैंने अपने पिता से पूछा कि मैं इस शाप से कैसे आजाद होऊॅगी। तो उन्होंने कहा कि जब कृष्ण पक्ष की 14वीं रात को कोई राजा तुझसे शादी करेगा तब तू इस शाप से आजाद हो जायेगी।

[20] Vidyaadhar is a kind of species of people, like Vaanar, Kinnar, Gandharv, Raakshas, etc.

आपकी मेहरबानी से आज मैं उस शाप से आजाद हो गयी। अब मैं आपकी आज्ञा से अपने पिता के घर जाना चाहती हूॅ।"

राजा बोला — "अभी तुम मेरे साथ मेरे घर चलो फिर मैं तुमको तुम्हारे पिता के घर छोड़ दूॅगा।"

लड़की राजी हो गयी और वह राजा के साथ उसके महल चली आयी। वहॉ आ कर राजा ने उससे शादी कर ली। पूरे शहर में शादी की खुशियॉ मनायीं गयीं।

मन्त्री ने देखा कि राजा के साथ तो एक दैवीय लड़की आ गयी है और वह तो उसी में खोया रहता है। राज काज की तरफ तो वह ध्यान ही नहीं देता।

अचानक कुछ दिन बाद ही मन्त्री मर गया।"

यह कहानी सुना कर बेताल बोला — "राजन, क्या तुम बता सकते हो कि उस मन्त्री के अचानक मरने की क्या वजह थी? और इसमें क्या भेद छिपा है?"

राजा बोला — "वह मन्त्री राजा का दोस्त था और राजा की जनता का भला चाहने वाला था। केवल उसी की वजह से राजा को विद्याधर की बेटी मदवती मिली थी।

पर उसने देखा कि उस लड़की के मिलने के बाद तो राजा दिनों दिन उसी में खोया रहता था। उसको लगा कि इस तरह से तो बहुत जल्दी ही यह देश नष्ट हो जायेगा क्योंकि राजा फिर अपने देश की तरफ ध्यान ही नहीं दे पायेगा।

और इस हालत मे कोई सलाह भी काम नहीं करेगी। वह राज्य को नष्ट होते नहीं देख सकता था। सो हे बेताल, उसने अपनी जान देने की सोची और फिर उसने अपनी जान दे ही दी।"

5 सबको अपने कर्मों का फल भुगतना है हरिस्वामी की कहानी[21]

बेताल फिर बोला — "हे राजन, एक कहानी और सुनो। चूड़ापुर शहर का एक राजा था चूड़ामणि। उसकी पत्नी का नाम था विशालाक्षी। रानी एक बेटे को पाने के लिये भगवान शिव की बहुत पूजा करती थी।

कुछ समय बाद उसको काम देव जैसा सुन्दर एक बेटा पैदा हुआ। उसका वह बेटा देवता का एक हिस्सा[22] था। उन्होंने उसका नाम हरिस्वामी रख दिया। हरिस्वामी ने इस धरती पर मिलने वाले सभी सुखों को भोगना शुरू कर दिया।

अब हुआ यह कि देवल मुनि[23] के शाप से शापित एक स्त्री से हरिस्वामी की शादी हो गयी। एक बार वह अपने महल में अपने बिस्तर पर सो रही थी कि सुकल नाम का एक गन्धर्व[24] वहॉ आया और सोती हुई रानी को उठा कर ले गया।

जब हरिस्वामी जागा तो उसको अपनी पत्नी नहीं मिली। वह अपनी पत्नी को ढूँढने लगा पर जब वह उसको कहीं नहीं मिली तो

[21] Everybody Has to Bear the Fruits of His Actions - a Vikram Betal story from Bhavishya Puran
[22] A part of Devtaa
[23] Sage Deval
[24] A Gandharv named Sukal

वह बहुत दुखी हो गया और शहर छोड़ कर जंगल चला गया। वहॉ जा कर वह भगवान की पूजा करने लगा।

एक दिन हरिस्वामी भिक्षा मॉगने के लिये एक ब्राह्मण के घर गया। ब्राह्मण ने खुशी खुशी खीर बनायी और उसको खाने के लिये दी। खीर का बरतन ले कर वह यह सोच कर नहाने के लिये एक नदी किनारे आया कि वह उस खीर को नहा कर खायेगा।

सो खीर का बरतन तो उसने एक बरगद के पेड़ के नीचे रख दिया और नहाने के लिये उस नदी में घुस गया। उसी समय एक सॉप वहॉ आया और उस खीर के बरतन में अपना जहर उगल कर वहॉ से चला गया।

हरिस्वामी नदी में से जब नहा धो कर आया तो अपनी खीर खाने बैठा। खीर खाते खाते ही उसको बेहोशी आने लगी क्योंकि उस खीर में तो सॉप का जहर था।

हरिस्वामी उस ब्राह्मण के घर वापस गया और बोला — "ओ नीच ब्राह्मण, मैं तेरी खीर खा कर मर रहा हूँ इसलिये तुझे ब्रह्म हत्या का पाप लगेगा।" इतना कह कर वह मर गया और शिव लोक पहुँच गया।"

इतनी कहानी सुना कर बेताल ने राजा से पूछा — "हे राजन, बताओ कि इसमें किसको लगा ब्रह्म हत्या का पाप ब्राह्मण को या सॉप को?"

राजा बोला — "सॉप ने तो अनजाने में उस खीर में अपना जहर डाला था इसलिये वह इस हत्या का जिम्मेदार नहीं है।

और ब्राह्मण के लिये तो सन्यासी देवता के बराबर था। उस ब्राह्मण ने तो अपना कर्तव्य निभाया कि उसने श्रद्धा के साथ वह खीर बनायी और उस ब्राह्मण को खाने के लिये दी।

अगर वह खीर उसको अपमान के साथ देता तभी भी वह ब्रह्म हत्या का भागी हो सकता था। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

और फिर जो खीर उस ब्राह्मण ने उस सन्यासी को खाने के लिये दी थी उसमें तो कोई जहर था ही नहीं। अगर जो खीर वह उसको खाने के लिये देता और उसमें जहर होता तब उसको पाप लगता। सो किसी भी हालत में उसको तो ब्रह्म हत्या का पाप लग ही नहीं सकता।

अब बचता है सन्यासी। इस दुनियॉ में हर एक को अपने अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ता है। वह केवल अपने ही किसी पुराने कर्म के फल से अपनी ही मौत ही मरा। उसकी मौत में न तो किसी का दोष है और न ही किसी का हाथ है।

खीर खाना तो उसकी मौत का केवल बहाना बन गया। इसलिये इस हालत में उसकी हत्या का कोई जिम्मेदार नहीं है।"

6 जान देने का उदाहरण
जीमूतवाहन और शंखचूड़ की कहानी[25]

बेताल विक्रम से फिर बोला — "लो एक कहानी ओर सुनो। एक बार कान्यकुब्ज क्षेत्र[26] में एक ब्राह्मण रहता था। वह बहुत धार्मिक था। वह जो कुछ भी घरों से दान में इकट्ठा करता था वह सब दान में दे देता था।

एक बार नव रात्रि के व्रतों के दिनों में उसको किसी घर से कुछ नहीं मिला तो उसे चिन्ता हुई। उसने सोचा "मैंने तो घर में कन्याएँ बुलायी हुई हैं[27] अब मैं उनको कैसे खिलाऊँगा।"

वह ऐसा सोच ही रहा था कि देवी की कृपा से उसको **5** सोने के सिक्के मिल गये। उस दिन का व्रत उसने उन्हीं सिक्कों से खत्म किया।

क्योंकि उसने खुद ने **9** दिन तक कुछ नहीं खाया पिया था[28] तो उस व्रत के असर से वह देवता रूप हो गया। वह जीमूतकेतु यानी विद्याधरों का सरदार बन गया। वह हिमालय पहाड़ पर एक

---

[25] Example of Sacrificing One's Life : Story of Jeemootvaahan and Shankhchood – a Vikram Betal story from Bhavishya Puran

[26] Present Kannauj area in UP

[27] It is a custom in North India that in Nava Raatri days which come twice a year, people feed girls under the age of 10 daily considering them the form of Devee.

[28] In the same way people keep fast in many ways on all those 9 days of Nava Raatri. Nava means 9 and Raatri means night.

बहुत बड़े से महल में रहने लगा और वहॉ रह कर भक्ति के साथ कल्प वृक्ष[29] की पूजा करने लगा।

इस कल्प वृक्ष की पूजा के फल से उसके एक बेटा हुआ जिसका नाम उसने जीमूतवाहन रखा।

अब अपने पिछले जन्म में यह जीमूतवाहन मध्य भारत के एक देश का राजा था – राजा शूरसेन। एक बार यह राजा शूरसेन शिकार खेलते खेलते वाल्मीकि ऋषि के आश्रम की तरफ आ निकला जो उत्पलावर्त में था।

वहॉ उसने चैत्र मास की नवमी[30] को राम का जन्म दिन मनाया। रात भर जागा तो उसी पुन्य के असर से वह विद्याधर बन कर एक विद्याधर के घर में पैदा हुआ।

उस घर में पैदा होने के बाद जीमूतवाहन खुद भी कल्प वृक्ष की पूजा करने लगा। एक साल के अन्दर अन्दर ही कल्प वृक्ष ने उससे कहा कि वह उससे कोई भी वर मॉग ले। जीमूतवाहन बोला कि "मेरा शहर सब तरह से फला फूला हो जाये।"

यह सुन कर वह कल्प वृक्ष उसके शहर की जमीन में घुस गया और उस शहर को खुशहाल और फला फूला बना दिया। अब वहॉ

[29] Kalp Vriksh is a mythical tree which fulfills all kinds of wishes. Presently it is supposed to be in Dev Nagaree – Indra Puree.

[30] For all religious purposes Indians observe their Lunar calendar. Chaitra month is the first month of that calendar and its 9th day is celebrated as the birthday of Lord Raam.

कोई ऐसा नहीं था जो राजा के बराबर न हो। सभी राजा की तरह सुखी और खुशहाल थे।

बाद में पिता और बेटा दोनों मलयाचल के जंगल में तप के लिये चले गये और वहॉ जा कर घोर तप किया।

एक दिन राजा मलयध्वज की बेटी कमलाक्षी अपनी सहेलियों के साथ शिव की पूजा करने के लिये शिव के मन्दिर गयी। इत्तफाक से उसी समय जीमूतवाहन भी वहॉ पूजा करने के लिये आया।

जैसे ही उसने राजकुमारी कमलाक्षी को देखा तो वह उसके प्रेम में पड़ गया और उसको पाने की इच्छा उसके मन में जाग उठी। उसने अपने मन की बात उससे कह दी। राजकुमारी भी उसको चाहने लगी थी तो राजा मलयध्वज ने अपनी बेटी की शादी जीमूतवाहन से कर दी।

एक दिन मलयध्वज का बेटा विश्वावसु यानी कमलाक्षी का भाई जीमूतवाहन के साथ गन्धमादन पहाड़ पर गया। वहॉ उसने नर और नारायण के दर्शन किये और उनको प्रणाम कया। तभी वहॉ पर विष्णु जी की सवारी गरुड़ जी आ गये।

जहॉ जीमूतवाहन था वहीं शंखचूड़ नाग की मॉ बैठी हुई रो रही थी। जीमूतवाहन ने उसको रोते देखा तो वह उसके पास गया और उससे पूछा — "तुम क्यों रो रही हो? तुम्हें क्या दुख है?"

शंखचूड़ नाग की मॉ बोली — "आज गरुड़ मेरे बेटे को खा लेगा। मैं इसी लिये रोती हूॅ।"

यह सुन कर जीमूतवाहन जहॉ गरुड़ जी थे उनके पास गया तो गरुड़ जी ने सोचा कि आज यही मेरा खाना है सो उन्होंने उसको अपने पंजों में पकड़ लिया और आसमान में उड़ गये।

जब कमलाक्षी ने देखा कि गरुड़ जी उसके पति को खा रहे हैं तो उसने रोना शुरू कर दिया। पर गरुड़ जी ने देखा कि वह जब जीमूतवाहन को खा रहे थे तो जीमूतवाहन को कोई दर्द नहीं हो रहा था।

गरुड़ जी भी उसको आदमी की शक्ल में देख कर डर गये क्योंकि वह तो नाग को खाने आये थे और यह तो एक आदमी था। उन्होंने जीमूतवाहन से पूछा — "तुम मेरा खाना क्यों बने?"

जीमूतवाहन बोला — "क्योंकि शंखचूड़ नाग की मॉ बहुत दुखी थी सो उसके बेटे को बचाने के लिये मैं तुम्हारे पास आया।"

जब शंखचूड़ नाग को इस बात का पता चला तो वह भी गरुड़ जी के पास आया और बोला — "मैं हूँ तुम्हारा खाना। तुम इस दैवीय आदमी को छोड़ दो और मुझे खा लो।"

जीमूतवाहन की दूसरे की भलाई करने की भावना को देख कर गरुड़ जी को बहुत खुशी हुई। उन्होंने उसको तीन वरदान दिये।

एक तो "मैं शंखचूड़ की सन्तान को कभी नहीं खाऊँगा।"

दूसरे "विद्याधरों के राज्य में तुमको बहुत ऊँचा पद मिलेगा।

तीसरे "एक लाख साल जीने के बाद तुमको वैकुंठ मिलेगा।"

इतना कहने के बाद गरुड़ जी वहॉ से चले गये।

अपने पिता के बाद जीमूतवाहन को उनका राज्य मिल गया और एक लाख साल धरती पर सुख भोगने के बाद वह वैकुंठ चला गया।"

कहानी सुनाने के बाद बेताल विक्रम से बोला — "अब तुम यह बताओ राजन कि इनमें से ज़्यादा साहसी कौन था – जीमूतवाहन या शंखचूड़ नाग? और इन दोनों में से किसको ज़्यादा अच्छा फल मिला?"

राजा बोले — "हे बेताल। इसमें शंखचूड़ नाग को राजा जीमूतवाहन से ज़्यादा अच्छा फल मिला क्योंकि दूसरों की भलाई करना तो राजा का कर्तव्य है। हालॉकि जीमूतवाहन ने अपनी ज़िन्दगी उसको दे कर एक तरह से शंखचूड़ की तरफदारी ही की।

हालॉकि उसी की वजह से गरुड़ जी ने उसको एक लाख साल की ज़िन्दगी दी और बाद में वैकुंठ में वास दिया पर फिर भी यह राजा के कर्तव्यों में ही आता है। इसलिये जीमूतवाहन का बलिदान शंखचूड़ के साहस से ज़्यादा बड़ा नहीं है।

बल्कि शंखचूड़ नाग ने अपनी ज़िन्दगी अपने दुश्मन गरुड़ जी को दे कर राजा जीमूतवाहन की ज़िन्दगी बचायी। इसलिये शंखचूड़ नाग ही अच्छे फलों का हकदार है।"

बेताल राजा के इस जवाब से बहुत सन्तुष्ट हुआ।

7 सबको अपने कर्मों का फल भुगतना है गुणाकर की कहानी[31]

बेताल फिर बोला — "लो अब यह कहानी सुनो। एक बार उज्जयिनी में एक राजा राज करते थे। उनका नाम था महासेन। उनके राज्य में एक ब्राह्मण रहता था जिसका नाम था देवशर्मा। देवशर्मा का एक बेटा था जिसका नाम था गुणाकर।

गुणाकर को शराब पीने और जुआ खेलने दोनों की बहुत ही बुरी लत थीं। उसने अपने पिता का बहुत सारा पैसा शराब और जुए में ही उड़ा दिया था।

जब उसके पास पास पैसा नहीं रहा तो उसके दोस्तों ने भी उसको छोड़ दिया। अब वह इधर उधर घूमने लगा। अपनी अच्छी किस्मत से एक दिन वह एक सिद्ध मुनि के आश्रम में आ निकला।

वहॉ कपर्दी नाम के एक योगी ने उसको कुछ खाने के लिये दिया पर उसने उसे यह सोच कर नहीं खाया कि कहीं ऐसा न हो कि वह किसी पिशाच का खराब किया हुआ हो।

तब उस योगी ने एक यक्षिणी को उसको लुभाने के लिये बुलाया और उस यक्षिणी ने जा कर गुणाकर को कुछ दिन के लिये लुभाया। उसके बाद वह कैलाश पहाड़ पर चली गयी।

[31] Everybody Has to Enjoy the Fruit of His Actions – a Vikram Betal story from Bhavishya Puran

गुणाकर उसका विरह नहीं सह सका सो वह फिर उसी योगी के पास गया और उस यक्षिणी के बारे में पूछा तो योगी ने उसको उस यक्षिणी को लुभाने का तरीका बताया।

उसने उसको एक मन्त्र दिया और कहा कि वह उस मन्त्र का आधी रात को पानी में खड़ा रह कर **40** दिन तक जाप करे। और कहा कि अगर यह मन्त्र तुमको सिद्ध हो गया तो वह यक्षिणी तुम्हारे पास आ जायेगी।

गुणाकर ने यह सब किया पर वह यक्षिणी को नहीं लुभा सका। आखिर योगी की सलाह मान कर वह घर वापस चला गया। वहॉ जा कर उसने अपने माता पिता को प्रणाम किया और सोने चला गया।

अगले दिन वह सन्यासियों के मठ में गया और वहॉ उनका शिष्य बन कर रहने लगा। वहॉ उसने पॉच आग[32] के बीच में बैठ कर अपने आपको साफ किया और फिर से उसी मन्त्र का जाप किया जो उसको उस कपर्दी ने दिया था।

पर वह यक्षिणी फिर भी नहीं आयी। इससे वह बहुत उदास हो गया।"

[32] Five fires means Panchaagni. In this situation a man sits in the midst of five fires – four fires burnt on his four sides and sunshine above his head, thus there are five fires. This is one kind of Tap.

कहानी सुनाने के बाद बेताल बोला — "राजन, अब तुम यह बताओ कि उस योगी के बताये अनुसार मन्त्र का जाप करने के बाद भी वह यक्षिणी उसके पास क्यों नहीं आयी?"

राजा बोला — "ओ रुद्र के दास, किसी भी साधक को अपनी साधना करने के लिये तीन गुणों की जरूरत होती हैं – दिल, बोली और शरीर[33]।

जो भी काम दिल से और बोलने से किया जाता है वह काम उस आदमी को दूसरी दुनियॉ में सुख पहुँचाता है।

जो काम केवल शरीर से और बोलने से किया जाता है। वह काम सुन्दर है। वह काम थोड़ा सा इस दुनियॉ में फल देता है और ज़्यादा फल दूसरी दुनियॉ में देता है।

और जो काम शरीर से और दिल से किया जाता है वह केवल दूसरी दुनियॉ में ही फल देता है।

पर जो काम तीनों से किया जाता है यानी दिल से, बोलने से और शरीर से उस काम का फल इसी दुनियॉ में मिल जाता है और जल्दी मिलता है। बाद में यह मोक्ष भी देता है।

इसलिये अगर किसी भी साधक को कोई भी चीज़ अभी इसी दुनियॉ में चाहिये तो उसको वह काम दिल से, बोलने से और शरीर से तीनों से करना चाहिये।

[33] These three qualities are called "Manasaa, Vaachaa, Karmanaa" – means one should do it with heart, speech and action (by the body)

हालॉकि गुणाकर ने बड़ी मेहनत से उस मन्त्र का दो बार जाप किया पर दोनों बार ही उसका दिल उसमें नहीं था। जब वह पानी में था या पॉच आगों के बीच में बैठा था उस समय उसका केवल शरीर ही वहॉ था, और थी उसकी बोली। पर गुणाकर का दिल उस मन्त्र में नहीं था। वह तो यक्षिणी में लगा था।

इसी वजह से उसको मन्त्र में विश्वास भी नहीं था और इसलिये शरीर और बोली के होते हुए भी, क्योंकि उसका वहॉ दिल नहीं था उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी।

पर क्योंकि उसने कर्म किया था इस लिये वह अपने दूसरे जन्म में यक्ष के रूप में पैदा हुआ और यक्षिणी को भी पाया।

यह साबित करता है कि किसी भी काम को पूरा करने के लिये दिल, बोली और शरीर तीनों की जरूरत होती है। और इन तीनों में भी दिल सबसे ज़्यादा जरूरी है।"

8 सब बच्चों को एक सा समझो एक मॅझले बेटे की कहानी[34]

बेताल ने आगे कहना शुरू किया — "राजन एक और कहानी। एक बार चित्रकूट में एक बड़ा मशहूर राजा रहता था जिसका नाम था रूपदत्त।

एक बार वह शिकार खेलने के लिये गया तो एक हिरन का पीछा करते करते एक जंगल में निकल गया।

दोपहर होते होते वह एक तालाब के किनारे आ पहुँचा। वहाँ उसने एक ऋषि की बेटी को अपनी सहेलियों के साथ तालाब में से कमल के फूल चुनते हुए देखा।

उसको देख कर राजा ने सोचा कि वह उसको अपनी रानी बनायेगा। वह लड़की भी राजा को देख कर बहुत खुश हुई और दोनों को एक दूसरे से प्यार हो गया।

राजा ने उसकी एक सहेली से उसके बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह एक ऋषि की बेटी थी। तभी उसके पिता भी वहाँ आ गये।

राजा ने उनको प्रणाम किया और उनसे पूछा — "हे मुनि, सबसे ऊँचा धर्म क्या है?"

[34] Consider All Children Alike : Story of the Middle Son – a Vikram Betal story from Bhavishya Puran

मुनि ने जवाब दिया — "हे राजन किसी बेसहारे का पालन पोषण करना, शरण में आये हुए की रक्षा करना, और सब पर दया करना – ये ही सबसे ऊचे धर्म हैं।

अगर जो डरा हुआ हो तो उसके डर को भगाने से बड़ा और कोई दूसरा धर्म नहीं है। बुरे लोगों को सजा दो और आदरणीय लोगों का, ब्राह्मणों का और गाय का आदर करो।

जब तुम सजा दो तो सबको एक सा समझो, किसी की तरफदारी मत करो। और जब तुम किसी देवता की पूजा करो तो हमेशा उसकी भक्ति से पूजा करो, उसको धोखा मत दो।

जब तुम दान करो तो हमेशा उसके साथ नम्रता और मीठा बरताव करो। कभी कोई तुमसे कोई छोटा सा भी गलत काम हो जाये तो उसको बहुत बड़ा समझ कर उससे बचने की कोशिश करो।"

इसके बाद उन ऋषि ने अपनी बेटी की शादी उस राजा से कर दी। शादी के बाद राजा उस लड़की को अपनी राजधानी ले गया। रास्ते में वे एक बरगद के पेड़[35] के नीचे रुके।

एक राक्षस उसकी पत्नी को खाने के इरादे से वहॉ आया और बोला — "तुमने मेरी जगह को गन्दा किया है इसलिये मैं तुमको खाऊॅगा।"

[35] Banyan tree

राजा ने उससे माफी माँगी पर वह राक्षस बोला — "अगर तुम मुझको एक सात साल का ब्राह्मण बच्चा दो तो मैं तुम्हें आजाद कर दूँगा।"

राजा ने उसको वह बच्चा देने का वायदा किया और अपनी पत्नी के साथ अपने घर चला गया। अगले दिन उसने अपने मन्त्रियों को पिछले दिन का हाल बताया।

मन्त्रियों की सलाह पर राजा ने **100,000** सोने के सिक्कों के बदले में एक ब्राह्मण का मँझला बेटा उस राक्षस को देने के लिये ले लिया। वह बच्चा भी अपने पिता के लिये अपने आपकी बलि देने के लिये तैयार हो गया।

सारे लोग ठीक समय पर राक्षस के पास आये। जब उस बच्चे की बलि चढ़ाने का समय आया तो वह बच्चा पहले तो बहुत ज़ोर से हँसा और फिर बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।"

इतनी कहानी सुना कर बेताल ने राजा विक्रम से पूछा — "राजन, यह बताओ कि ब्राह्मण का वह लड़का पहले हँसा क्यों और फिर रोया क्यों?"

राजा बोले — "सबसे बड़ा बेटा पिता को सबसे ज़्यादा प्यारा होता है और सबसे छोटा बेटा माता को सबसे ज़्यादा प्यारा होता है। और वह क्यों कि मँझला था इसी से वह अपने आपको अपने घर में बेकार समझ रहा था।

इसी लिये उसने बड़ी उम्मीदों के साथ राजा के पास शरण ली। पर उस बेरहम राजा के हाथ में तलवार देख कर जो अपनी पत्नी को खुश करना चाहता था पहले तो वह हॅसा पर फिर ज़ोर से रो पड़ा। उसको लगा कि उसका यह भला शरीर केवल राक्षस के ही लायक था।"

बेताल राजा का यह जवाब सुन कर बहुत खुश हुआ।

9 पढ़ो कम और समझो ज़्यादा
चार बेवकूफों की कहानी[36]

बेताल फिर बोला — "राजन बस यह आखिरी कहानी। एक बार जयपुर में एक राजा राज्य करता था। उसका नाम था वर्धमान। उसके राज्य के एक गॉव में एक ब्राह्मण रहता था जिसका नाम था विष्णुस्वामी। उसके चार बेटे थे।

उसके पहले बेटे का नाम था द्यूतकर्मा यानी जुआ खेलने वाला। उसके दूसरे बेटे का नाम था व्यभिचारी यानी वह हमेशा लड़कियों के पीछे भागता रहता था।

उसके तीसरे बेटे का नाम था विषयी। वह हमेशा ही आनन्द भोगता रहता था। और चौथे का नाम था नास्तिक। वह भगवान में बिल्कुल ही विश्वास नहीं करता था।

इस तरह से उनके गुण उनके नाम के ही अनुसार थे। एक समय उनके ऊपर ऐसा खराब आया कि बदकिस्मती से वे सब गरीब हो गये।

सो एक बार वे सब अपने पिता के पास गये और उनको प्रणाम करके उन्होंने उनसे पूछा — "पिता जी, हम लोग गरीब कैसे हो गये?"

---

[36] Less Reading More Understanding – Story of Four Fools - a Vikram Betal story from Bhavishya Puran [My Note : Surprisingly this story is found in several flavors in several countries under several titles.]

पिता बोला — "द्यूतकर्मा ने जुए में पैसे खो दिये। यह पाप की जड़ है। यह बुरी आदतों को पैदा करता है जैसे चोरी, बेरहमी आदि। इन सबके नतीजे बुरे ही होते हैं। इसलिये तुमने अपना पैसा खो दिया।"

वह लड़का गिड़गिडा कर बोला — "पिता जी तो फिर मुझे बताइये कि पैसा कमाने का सही तरीका क्या है?"

पिता ने कहा — "अगर तुम तीर्थ जाओगे और वहाँ जा कर व्रत आदि करोगे तो तुम्हारे सारे पाप धुल जायेंगे। फिर तुम अपने माता पिता का कहना मानना।"

पिता ने अपने दूसरे बेटे से कहा — "बेटे तुम व्यभिचारी हो। वेश्याओं की संगत बहुत बुरी होती है। तुम अपनी यह आदत छोड़ दो। तुम ब्रह्मचर्य का पालन करो और भगवान का ध्यान करो। भगवान तुम्हें सुखी रखेंगे।"

उसने अपने तीसरे बेटे विषयी से जो हमेशा आनन्द भोगने में ही लगा रहता था कहा — "माँस खाना और शराब पीने से हमेशा ही पाप बढ़ते हैं। ऐसा करके तुम चोरी को बढ़ावा दोगे और फिर नरक में जाओगे। इसलिये तुम विष्णु की हर चीज़ से पूजा करो और अपना खाना शान्ति से खाओ।"

उसने अपने चौथे बेटे नास्तिक से कहा — "बेटा, तुम अपनी यह भगवान को न मानने वाली आदत छोड़ दो और भगवान को

मानने का रास्ता अपनाओ। आत्मा शुद्ध है, विद्वान है, अमर है और महादेवी चंडिका बहुत बड़ी शक्ति हैं।

देवता जो हर आदमी के दिल में रहते हैं भगवान का ही एक हिस्सा हैं। उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करो और अपने पापों की शान्ति के लिये उनकी पूजा करो।"

यह सुन कर चारों बेटों ने उसका कहना मान कर वैसा ही करना शुरू कर दिया जैसा कि उनके पिता ने उनसे कहा था। उन सबने ज्ञान प्राप्त करने के लिये शिव की पूजा करनी भी शुरू कर दी। एक साल के बाद शिव जी ने उन सबको संजीवनी विद्या[37] दे दी।

संजीवनी विद्या पाने के बाद उसको जॉचने के लिये वे जंगल की तरफ चल दिये। जंगल में उनको कुछ हड्डियॉ पड़ी मिलीं तो सबसे बड़े बेटे ने उनको इकट्ठा करके कहा — "मैं अपने ज्ञान से यह बता सकता हूँ कि ये हड्डियॉ एक मरे हुए शेर की हैं।"

ऐसा कह कर उसने उनके ऊपर मन्त्र पढ़ा हुआ जल छिड़का तो वे सारी हड्डियॉ अपने आप ही तरतीबवार लग कर एक शेर के ढॉचे में बदल गयीं।

[37] The knowledge by which a dead body can be brought to life. In olden days Daitya Guru Shukraachaarya Jee had this knowledge. Then Dev Guru Brihaspati's son Kach learnt this knowledge from him.

ब्राह्मण के दूसरे बेटे व्यभिचारी ने अपना मन्त्र पढ़ा जल उसके ऊपर छिड़का तो उस ढाँचे पर माँस चढ़ गया और उसके शरीर में खून बहने लगा।

तीसरे बेटे विषयी ने अपना मन्त्र पढ़ा जल उसके ऊपर छिड़का तो उस पर खाल चढ़ गयी और उसमें जान पड़ गयी।

अब चौथे बेटे नास्तिक ने उस सोते हुए शेर को जगाने के लिये अपना मन्त्र पढ़ा जल उसके शरीर पर छिड़क दिया।

देखते ही देखते सोये हुए शेर ने एक अँगड़ाई ली और उठ कर उन चारों बेटों को खा गया।"

यह कहानी सुना कर बेताल ने विक्रम से पूछा — "विक्रम, अब तुम यह बताओ कि इन चारों में से सबसे बड़ा बेवकूफ कौन था?"

राजा बोला — "इनमें सबसे बड़ा बेवकूफ तो उस ब्राह्मण का वह चौथा बेटा था जिसने उस शेर के सोये हुए शरीर में जान डाली। अगर वह उसमें जान न डालता तो उन सबकी जान बची रहती। उसके शेर के शरीर में जान डालते ही वह शेर ज़िन्दा हो कर उठ गया और चारों को खा गया।"

कहानियॉ सुनाने के बाद —

बेताल बोला — "राजन तुम ठीक कहते हो। मैं तुम्हारे पास शिव जी की आज्ञा से आया था। मैंने तुमसे कई तरह के सवाल पूछ पूछ कर तुम्हारा इम्तिहान ले लिया और तुमने मेरे सब सवालों का बड़ी अक्लमन्दी के साथ सही सही जवाब दिया।

मैं तुमसे बहुत खुश हूॅ। मैं तुम्हारी बॉहों में रहूॅगा जिससे तुम इस धरती पर अपने सारे दुश्मनों को जीत पाओगे। हमारे दासों ने यहॉ के सारे शहर नष्ट कर दिये हैं सो शास्त्र के अनुसार नाप कर तुम उनको फिर से बसाओ और इस धरती का न्यायपूर्वक पालन करो। धर्म तुम्हारे राज्य में फिर से फले फूलेगा।"

इतना कह कर बेताल राजा को देवी की पूजा करने की सलाह दे कर वहॉ से गायब हो गया। उसके बाद राजा विक्रम ने अश्वमेध यज्ञ किया और चक्रवर्ती राजा[38] बन गया। बाद में वह स्वर्ग चला गया।

इसी विक्रमदित्य ने विक्रम संवत शुरू किया था जो आजकल सारे भारत में प्रचलित है।

[38] Chakravartee King is he in whose kingdom there is no other king of his own. They all are under him. He is an Emperor.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1

http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहॉ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहॉ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहॉ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहॉ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहॉ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहॉ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई 2018